



Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 19 अक्टूबर, 2021

लालन स्मरण उत्सव

16 अक्टूबर, 2021 को बांग्लादेश में महान सूफी संत 'लालन फकीर' की 131वीं पुण्यतिथि के अवसर पर बांग्लादेश शलिपकला अकादमी द्वारा 'लालन स्मरण उत्सव' का आयोजन किया गया। लालन फकीर का जन्म बांग्लादेश के कुश्तिया ज़िले के हरीशपुर गाँव (1774) में एक कुलनि हद्दि कायस्थ परिवार में हुआ था, हालाँकि उनका पालन-पोषण एक मुस्लिम परिवार में हुआ। 'फकीर लालन शाह' अवभाजति हद्दिसतान खासतौर पर बंगाल क्षेत्र में अपने समय के एक महान रहस्यवादी संत, दार्शनिक और समाज सुधारक थे। लालन 'शरिज शाह फकीर' के शिष्य थे और 'लालन शाह फकीर' के नाम से प्रसिद्ध हुए। वह न केवल एक बंगाली संत थे बल्कि एक गीतकार, दार्शनिक और समाज सुधारक भी थे। गरीब एवं अनपढ़ होने के बावजूद वे 19वीं सदी के दौरान बंगाल में धर्म के एकीकरण के प्रतीक के रूप में उभरे। उन्होंने अपने जीवनकाल में लगभग 10,000 गीतों की रचना की थी। उनके दर्शन में इस्लाम, वैष्णववाद और शाहजिया, बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म का सम्मिश्रण मलिता है। उन्होंने रवीन्द्रनाथ टैगोर, काजी नजरूल इस्लाम और अमेरिकी कवि एलन गिन्सबर्ग जैसी महान हस्तियों को प्रेरित और प्रभावित किया। 116 वर्ष की आयु में वर्ष 1890 में उनकी मृत्यु हो गई।

अंतरराष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दविस

प्रतिवर्ष 17 अक्टूबर को 'अंतरराष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दविस' का आयोजन किया जाता है। यह दविस गरीबी में जीवनयापन करने के लिये मज़बूर लोगों के संघर्षों को मान्यता देने का एक साधन है। गौरतलब है कि 17 अक्टूबर, 1987 को गरीबी, भूख एवं हिसा के पीड़ितों को सम्मानित करने हेतु पेरिस के 'ट्रोकाडेरो' में एकत्र हुए लोगों द्वारा 'गरीबी' को मानवाधिकारों के उल्लंघन के रूप में घोषित किया गया था। साथ ही इसी दिने वर्ष 1948 में 'मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा' पर भी हस्ताक्षर किये गए थे। इसके पश्चात् संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 22 दिसंबर, 1992 को 'संकल्प-47/196' को अपनाकर 17 अक्टूबर को 'अंतरराष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दविस' के रूप में घोषित किया। 'वशिव बैंक' की एक रिपोर्ट के अनुसार, कोविड-19 महामारी ने लगभग 88 से 115 मिलियन लोगों को गरीबी में धकेल दिया है, जिसमें से अधिकांश लोग दक्षिण एशियाई और उप-सहारा क्षेत्रों के हैं। माना जाता है कि यह संख्या आने वाले समय में 143 से 163 मिलियन तक बढ़ सकती है। वदिति हो कि ये आँकड़े मौजूदा 1.3 बिलियन लोगों के अतिरिक्त हैं जो महामारी से पूर्व भी गरीबी में जीवनयापन कर रहे थे।

आयुध नदिशालय

हाल ही में ई.आर. शेख ने 'आयुध नदिशालय' (समन्वय और सेवा) के पहले महानदिशक के रूप में कार्यभार संभाला है, यह 'आयुध नदिशालय बोर्ड' (OFB) की समाप्ति के बाद नव-नरिमति इकाई है। ई.आर. शेख 1984 बैच के एक भारतीय आयुध नदिशालय सेवा (IOFS) अधिकारी हैं। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, आयुध नदिशालय 'आयुध नदिशालय बोर्ड' का उत्तराधिकारी संगठन है। भारत सरकार ने 1 अक्टूबर, 2021 को 'आयुध नदिशालय बोर्ड' को भंग कर दिया था और उसकी समग्र संपत्ति, प्रबंधन, कर्मचारियों को सात नव-स्थापित 'रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों' में स्थानांतरित कर दिया गया था। केंद्र सरकार के नरिणय के मुताबकि, देश भर में 41 कारखानों को रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के सात नए उपक्रमों में बदला जाना है। नव-नरिमति संस्थाएँ सरकार के 100% स्वामित्व में होंगी। ये संस्थाएँ उत्पादों के विभिन्न कार्यक्षेत्रों के लिये ज़िम्मेदार होंगी जैसे कि गोला-बारूद और वस्फोटक समूह गोला-बारूद का उत्पादन करेंगे, जबकि एक वाहन समूह रक्षा गतिशीलता और लड़ाकू वाहनों के उत्पादन में संलग्न होगा।

माउंट मणपुरि

मणपुरि के स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में एक द्वीप शिखर- 'माउंट हैरियट' का नाम बदलकर 'माउंट मणपुरि' करने का नरिणय लिया है। इस संबंध में घोषणा करते हुए गृह मंत्री ने कहा कि मणपुरि ने वर्ष 1857 की क्रांति के दौरान और वर्ष 1891 में पूर्वोत्तर में अंग्रेज़ों का वरिोध करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एकमात्र ऐसा राज्य था, जिसने अपना संबन्धित लागू किया था। वदिति हो कि मणपुरि युद्ध के नायक युवराज टकिंदरजीत और जनरल थंगल को इंपाल में सार्वजनिक रूप से फाँसी दी गई थी। 'माउंट हैरियट' (अब 'माउंट मणपुरि') अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की तीसरी सबसे ऊँची द्वीप चोटी, जहाँ एंग्लो-मणपुरि युद्ध (1891) के दौरान मणपुरि के महाराजा कुलचंद्र सहि और 22 अन्य स्वतंत्रता सेनानियों को केंद्र किया गया था।

